ISSN 2278-8808 SJIF 2015: 5.403
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

"सत्संगति" एक जीवन मागर्दशक मूल्य

S. K. Pundir, Ph. D.
Associate Professor, Dept. of Education, Meerut College Meerut

Abstract

श्रीगोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महान ग्रंथ श्रीरामचरितमानस में जीवन के समस्त मूल्य विद्यमान हैं, जो हमारे जीवन को उत्कर्ष बनाने का कार्य करते हैं। यह जीवन मूल्य कुछ नियम, उप नियम और परंपराओं से निर्मित होते है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हैं। जिनके विशय में ग्रंथों और साहित्यों में बारम्बार लेख आते रहते हैं। इनमें से यदि हम कुछ मूल्य भी अपने जीवन में अपना लें, तो हमारे अन्दर के अहंकार रूपी रावण का दमन हो सकता है और हमारा मन, मंदिर बन सकता है। उनमें से एक मूल्य है सत्संगति है। सत्संगति का प्रभाव मनुष्य के हर क्षेत्र में पड़ता है। अगर किसी मनुष्य की संगति अच्छी है, तो उसका जीवन अच्छा होगा और अगर किसी की कुसंगति है, तो उसका जीवन नर्क बन जाएगा।

शब्द बिन्दुः *सत्संगति, मूल्य, प्रभाव और सत्संग।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावनाः

हम सभी के जीवन में सत्संगति का बहुत ही अहम स्थान हैं क्योंकि अच्छी संगति हमारे जीवन को सवार कर, हमें बुलन्दी के रास्ते पर पहुंच आती है और कुसंगति अच्छे मनुष्य को भी नरक में धकेलने का कार्य करती है। अच्छी संगति का तात्पर्य श्रेश्ठ पुरुषों के साथ समय व्यतीत करना, उनके विचारों और आदर्श को ग्रहण करना, उनके बताए हुए सदमार्ग पर चलने से ही समाज में उत्कृष्ट जीवन व्यतीत करके मान मर्यादा प्राप्त की जा सकती है। उत्तम आचरण के मनुष्य के साथ ही उठना–बैठना चाहिए उन्हीं की सत्संगति करनी चाहिए। क्योंकि मनुष्य पर उसके चारों तरफ होने वाली सभी गतिविधियों का प्रभाव

पड़ता है। मनुष्य तो क्या हमारे आसपास रहने वाले पशु–पक्षियों, वनस्पतियों पर भी वातावरण का प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जैसी संगति में रहेगा, उस पर वैसी ही संगति का कुछ ना कुछ प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा, जिस प्रकार **स्वाति नक्षत्र** की एक बूंद संगति और विसंगति के अनुरूप परिवर्तित हो जाती है। सीप के संपर्क में आने पर मोती बन जाती है। उसी प्रकार पारस के संपर्क में आने से लोहा भी सोना बन जाता है। हम सभी को भी इसी प्रकार सत्संगति का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि कुसंगति में फस कर काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया में फस कर हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और हम सही–गलत का निर्णय नहीं कर पाते। जिस प्रकार दानवीर कर्ण धनुर्धर गुरु द्रोण और अवस्थामा जैसे महारथी भी कुसंगति में आकर अपने आदर्श भूलकर अपने पतन का कारण स्वयं बने।

रामचरितमानस में सत्संगति

श्री तुलसीदास जी ने संतों के सानिध्य को आनन्द देने वाला और मंगल करने वाला बताया है। उन्होंने अच्छे लोगों की संगति को तीर्थराज प्रयाग की उपमा प्रदान की है। वे कहते हैं, जहाँ संत लोग रहते हैं, उनके पास जाना और उनके विचारों को ग्रहण करना, राम नाम की भक्ति की गंगा में स्नान और ब्रह्म ज्ञान देने वाली सरस्वती के समतुल्य है।

"मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू।
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा।।" (1/1/4)

गोस्वामी जी ने बताया है कि जब भी किसी ने बुद्धि कीर्ति सद्गति ऐश्वर्या और भलाई पाई है वह सब संगति का ही प्रभाव से पाई है या तो अपने गुरुजनों के संगति से या अपने बड़े बुजुर्गों की संगति से इन सब का क्योंकि वेदों में और इस लोक में इनको प्राप्त करने का दूसरा कोई उपाय नहीं है इनको प्राप्त करने का उपाय केवल संगति ही है

"मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई।
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ बेद न आन उपाऊ।। (1/2/3)

श्री तुलसीदास जी कहते हैं कि अच्छे मनुष्य के सत्संग के बिना मनुष्य को विवेक होता और अच्छे मनुष्य का सत्संग, श्री राम की कृपा के बिना नहीं मिलता है अर्थात जिन पर श्री राम की कृपा होती है, उन्हें ही अच्छे लोगों का सत्संग प्राप्त होता है। क्योंकि

सत्संगति ही आनंद और कल्याण की जड़ है, और जितनी भी सिद्धि (प्राप्ति) है, वह सब सत्संगति के फल हैं, और जितने भी दुनिया में साधन हैं वह सब सत्संगति के फूल हैं।

"बिनु सतसंग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।
सतसंगत मुद मंगल मूला। सोई फल सिधि सब साधन फूला।। (1/2/4)

श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में बताते है कि दुष्ट भी अच्छे मनुश्यों की सत्संगति पाकर सुधर जाते हैं, जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है। किन्तु अनहोनी से यदि कभी सज्जन व्यक्ति कुसंगति में पड़ जाता हैं, तो वे वहाँ भी साँप की मणि के समान अपने गुणों का ही अनुसरण करते हैं। अर्थात जिस प्रकार साँप का साथ पाकर भी मणि उसके विष को धारण नहीं करती तथा अपने गुण प्रकाश को नहीं छोड़ती, उसी प्रकार साधु पुरुष दुष्टों के संग में रहकर भी दूसरों को प्रकाश ही देते हैं।

"सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई।
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।" (1/2/5)

भगवान राम सत्संगी मनुष्य की रक्षा स्वयं करते हैं जैसे भगवान ने राक्षसों को मारकर देवताओं की सहायता की, जैसे उन्होंने वेदों की मर्यादा की रक्षा की, इसी प्रकार वह इस संसार में अपना यश फैलाने के लिए अच्छे मनुश्यों की सहायता करने को ही अवतार लिया है।

"असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु।।" (1/121)

सत्संगति की महिमा का वर्णन करते हुए श्री तुलसीदास जी कहते हैं यदि स्वर्ग और मोक्ष के सभी सुखों को तराजू के एक पलड़े में रख लिया जाए और सत्संगति के एक क्षण के सत्संग को दूसरे पर तराजू के पलड़े में रखा जाए, तो भी वह सत्संग के एक क्षण के पुण्य की बराबरी नहीं कर सकता है। इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि अच्छे लोगों के सानिध्य में हमें वह सुख प्राप्त होगा जो कहीं भी प्राप्त नहीं हो सकता है।

"तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।" (5/4)

इस दोहे में गोस्वामी जी बता रहे हैं कि सत्संग के बिना भगवान की कथा सुनने को नहीं मिलती और जब तक भगवान की कथा सुनने को नहीं मिलती, तब तक मोह माया दूर नहीं होती और जब तक मोह माया दूर नहीं होती, तब तक ईश्वर के चरणों में प्रेम नहीं होता है। इसलिए अगर हमें श्री राम के चरणों में अपना मन लगाना है, तो हमे सत्संग की आवश्यकता होगी।

"बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग।।" (7/61)

यहाँ पर कागभुसुंडि जी पक्षिराज गरुड़ को बताते हुए कहते हैं कि आपने मुझसे वह पावन रामकथा पूछी है, जो सुखदेव जी, संकादि और शिवजी के मन को प्रिय लगने वाली कथा है। इस पूरे संसार में भगवान राम के नाम का एक पल का सत्संग, भी मनुष्य को भवसागर से पार कर सकता है और उसके जीवन को सुखमय बना सकता है।

"पूँछिहु राम कथा अति पावनि। सुक सनकादि संभु मन भावनि।।
सत संगति दुर्लभ संसारा। निमिष दंड भरि एकउ बारा।।" (7/122ग/3)

निश्कर्श :

श्री तुलसीदास जी द्वारा रचित कालजयी ग्रंथ श्रीरामचरितमानस सभी को कल्याण मार्ग दिखाने वाला ग्रंथ है। जो हमारे समाज के हर वर्ग के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह हमारे सामान्य जीवन से लेकर विशिष्ट जीवन तक हर प्रकार के पहलू को प्रभावित करता है। इस ग्रंथ में मनुष्य के जीवन में आने वाले समस्त मानव मूल्यों को समाहित किया गया है। जो भी मनुष्य इन मूल्यों का पालन करेगा, वह इस समाज तो क्या भवसागर से भी आसानी से पार हो जाएगा। इन्हीं मूल्यों में से तुलसीदास जी ने सत्संगति मूल्य के प्रभाव को बहुत ही मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया है कि मनुष्य जब किसी महान, धार्मिक प्रवृत्ति के मनुश्य की शरण में या सानिध्य में जाता है, तो उसका सारा जीवन ही परिवर्तित हो जाता है। जिस प्रकार सुग्रीव का प्रभु श्री राम की शरण में आने से उनका खोया हुआ राजपाट, पत्नी वैभव, परिवार सब प्राप्त हो गया। उसी तरह राक्षस कुल में जन्म लेने के बाद भी विभीषण का श्री राम की शरण में आने से उद्धार हो गया और नीच

कुल में जन्म लेने के बाद भी सत्संगति के प्रभाव से श्रेष्ठ भक्तिवान लोगों में गिने जाते हैं। उन्हें लंका का पूरा राज्य पाठ जिसके लिए रावण ने अनेक बार अपने शीश की आहुति दी, विभीषण को वह सारा राज्यपाठ केवल श्रीराम के सत्संगति के कारण मिल गया।

आज का समय आधुनिकता का समय है, आज के समय में आदर्शवादीता, सत्संग, सत्संगति आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। आज तो सभी मनुष्य उन लोगों की संगति करते हैं, जहाँ से उनका अपना स्वार्थ सिद्ध होता है। बिना स्वार्थ के आज के युग में कुछ भी नहीं होता। सभी रिश्ते–नाते स्वार्थ से जुड़े हुए हैं, पिता–पुत्र में स्वार्थ है, गुरु–शिष्य में स्वार्थ है, भाई–भाई में स्वार्थ है, यहाँ तक कि मित्रता में भी स्वार्थ है और हमारी राजनीति तो स्वार्थ का ही दूसरा प्रतीक ही बन गई है। सब लोग अपने–अपने हिसाब से अपने–अपने फायदे के अनुसार रिश्तो को निभाते हैं। सत्संगति जैसे मूल्य तो अब केवल किताबों में ही रह गये है। हमें समय रहते जागना होगा और कुसंगति से बचना होगा। हमें सत्संगति को अपनाना है, क्योंकि "**सत्संगति वह कुंदन है जिसके सानिध्य में, अगर काँच सामान मानव भी आता है तो वह हीरे की तरह चमकने लगता है।**" इसलिए उन्नति का एकमात्र रास्ता सत्संगति ही है। सभी मनुष्य सज्जन पुरुषों के सत्संग में ही रहकर अपनी–अपनी **जीवन रूपी नौका को इस समाज या संसार तो क्या भवसागर से भी पार लगा सकते हो।** इसलिए हमें अतीत की घटनाओं से प्रेरणा लेकर सत्संगति के पथ पर चलना चाहिए। जिस प्रकार चंदन के वृक्ष पर विषधर साँप रात–दिन लिपटे रहते हैं, परन्तु वह अपनी शीतलता नहीं छोड़ता। उसी प्रकार सत्संगति के प्रभाव से हम बुरे व्यसनों से बच जाते हैं।

सन्दर्भ :

बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 1 चौ. 4.
बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 2, चौ. 3.
बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 2, चौ. 4.
बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 2, चौ. 5.
बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 121.
सुन्दरकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 4.
उत्तरकाण्ड़ रामचरितमानस, दो.61 .
उत्तरकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 122ग चौ. 3.